# भारत - डीपीआर कोरिया संबंध

## राजनीतिक संबंध

भारत और डीपीआर कोरिया के बीच संबंध आमतौर पर मैत्रीपूर्ण, सहयोगपूर्ण एवं आपसी समझ पर आधारित हैं। गुट निरपेक्ष आंदोलन के सदस्य के रूप में अनेक अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों, उदाहरण के लिए, निरस्त्रीकरण, दक्षिण – दक्षिण सहयोग आदि पर दोनों देशों के विचारों में समानताएं हैं।दोनों देशों ने अंतर्राष्ट्रीय मंचों में निकटता से काम करना और द्विपक्षीय एवं अंतर्राष्ट्रीय हित के विभिन्न मुद्दों पर एक – दूसरे का समर्थन करना जारी रखा है। भारत में 15 जून, 2000 के उत्तर – दक्षिण संयुक्त घोषणा का समर्थन किया था तथा कोरिया प्रायद्वीप में तनाव में कमी लाने तथा दोनों कोरिया के बीच सीधी वार्ता एवं शांतिपूर्ण उपायों के माध्यम से उनके पुन: एकीकरण का समर्थन करता है। भारत एवं डीपीआरके यूएन एवं अन्य अंतर्राष्ट्रीय संगठनों में सहयोग करते रहे हैं। विदेश कार्यालय परामर्श (एफ ओ सी) के तंत्र के माध्यम से आपसी हित के द्विपक्षीय मुद्दों पर विचारों का नियमित एवं सा थक आदान-प्रदान होता है। पिछले विदेश कार्यालय परामर्श का आयोजन सितंबर 2011 में पयोंगयांग में हुआ था। संयुक्त सचिव - महानिदेशक स्तर पर पहली वार्ता 2 से 4 अप्रैल 2013 के दौरान पयोंगयांग में हुई थी।

## महत्वपूर्ण द्विपक्षीय संधियां एवं करार तथा उन पर संक्षिप्त नोट

i) 8 मई, 1991 को भारत और डीपीआरके के बीच विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सहयोग पर करार (शुरू में यह 5 साल के लिए वैध था, जब तक कि किसी पक्षकार द्वारा इसे समाप्त करने का निर्णय न लिया जाए)। इस करार के कार्यान्वयन के लिए बाद में एक प्रोटोकॉल पर हस्ताक्षर किया जाना था, जो अभी तक नहीं हुआ है।

ii) डीपीआरके की राज्य अकादमी तथा भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी के बीच वैज्ञानिक सहयोग के लिए 14 जून, 1994 को हस्ताक्षरित करार (शुरू में यह 2 साल के लिए वैध था और फिर इसे स्वत: ही 5 साल के लिए बढ़ाया जाना था यदि किसी पक्षकार द्वारा इसे समाप्त नहीं किया जाता है)।

iii) भारत के विदेश मंत्रालय एवं डीपीआरके के विदेश मंत्रालय के बीच सहयोग के लिए 17 फरवरी, 1998 को हस्ताक्षरित प्रोटोकॉल (शुरू में यह 5 साल के लिए वैध था और फिर इसे स्वत: ही 5 साल की अगली अवधि के लिए बढ़ाया जाना था यदि किसी पक्षकार द्वारा इसे समाप्त करने का निर्णय नहीं लिया जाता है)।

iv) भारत और डीपीआरके के बीच पहले सांस्कृतिक करार पर 1976 में हस्ताक्षर किया गया। 2010 - 12 के लिए 11वें सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम पर 23 से 25 मार्च, 2010 के दौरान सचिव, संस्कृति मंत्रालय की यात्रा के समय हस्ताक्षर किया गया।

v) भारत और डीपीआरके के बीच सूचना के क्षेत्र में सहयोग के लिए करार पर हस्ताक्षर अप्रैल, 2006 में किया गया। इस करार के अनुच्छेद IX के तहत करार की प्रगति की समीक्षा करने के लिए एक संयुक्त समिति का गठन किया जाना था। भारत ने नवंबर, 2006 में एक समिति का गठन किया। पहली बैठक, जो पियोंगयांग में होने की संभावना थी, उसे किसी न किसी कारण से स्थगित कर दिया गया है। जब दोनों देशों द्वारा किसी तिथि को अंतिम रूप दे दिया जाएगा, तो इसका आयोजन होगा।

vi) भारत और डी पी आर कोरिया के बीच 2015-2019 के लिए $^{12}$वें सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम को अंतिम रूप दे दिया गया है तथा पक्षों द्वारा इस पर हस्ताक्षर होने की प्रतीक्षा है।

## द्विपक्षीय यात्राएं – महत्वपूर्ण दो तरफा यात्राओं का संक्षिप्त ब्यौरा

### (भारत की ओर से डी पी आर के की यात्राएं)

1. डीपीआरके के उप राष्ट्रपति (जिन्होंने मई, 1991 में भारत का दौरा किया) के निमंत्रण पर उप राष्ट्रपति डा. शंकर दयाल शर्मा की यात्रा (अप्रैल, 1992)।

2. कोरिया की वर्कर्स पार्टी की केंद्रीय समिति के निमंत्रण पर सी पी आई (एम) के महासचिव श्री एच एस सुरजीत की यात्रा (अप्रैल, 1993)।
3. कोरिया की वर्कर्स पार्टी की केंद्रीय समिति के निमंत्रण पर पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री श्री ज्योति बसु की यात्रा (मई, 1994)।
4. कोरिया के मुक्ति दिवस में भाग लेने के लिए सिक्किम के राज्यपाल श्री पी शिवशंकर की यात्रा (अगस्त, 1995)।
5. छठवें पियोंगयांग फिल्म महोत्सव में भाग लेने के लिए सूचना एवं प्रसारण राज्य मंत्री श्री मुख्तार अब्बास नकवी की यात्रा (सितंबर, 1998)।
6. विदेश कार्यालय परामर्श (एफ ओ सी) के सिलसिले में सचिव (पूर्व) श्री राजीव सीकरी और संयुक्त सचिव (ई ए) श्री अशोक कुमार कांता की यात्रा (जून, 2005)।
7. सचिव (पूर्व) श्री एन रवि ने मई, 2008 में डीपीआरके का दौरा किया।
8. श्री जवाहर सरकार, सचिव, संस्कृति मंत्रालय ने मार्च, 2010 में डीपीआरके का दौरा किया।
9. विदेश कार्यालय परामर्श (एफ ओ सी) के लिए श्री संजय सिंह, सचिव (पूर्व) एवं श्री संदीप चक्रवर्ती, निदेशक (ई ए) ने सितंबर, 2011 में पियोंगयांग का दौरा किया।
10. विभिन्न विश्वविद्यालयों में अनुसंधान करने तथा पियोंगयांग विश्वविद्यालय के विद्वानों के साथ बैठक करने के लिए 3 से 13, 2013 के दौरान प्रो. संदीप कुमार मिश्रा, पूर्वी एशियाई अध्ययन विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय ने पियोंगयांग का दौरा किया।
11. पहले संयुक्त सचिव – महानिदेशक स्तरीय वार्ता के लिए श्री गौतम एच बंबावाले, संयुक्त सचिव (ई ए) और श्री विजय कुमार, उप सचिव (ई ए), विदेश मंत्रालय ने 3 से 6 अप्रैल, 2013 के दौरान पियोंगयांग का दौरा किया।
12. माननीय संसद सदस्यों – श्री सीताराम वी येचुरी (राज्य सभा); श्री तरूण विजय (राज्य सभा); और मुहम्मद हमदुल्लाह सइद (लोक सभा); के तीन सदस्यीय शिष्टमंडल तथा श्री विजय कुमार, उप सचिव (ई ए) ने 26 से 29 जुलाई, 2013 के दौरान फादरलैंड लिबरेशन वार में जीत की 60वीं वर्षगांठ में भाग लिया।

**(डीपीआरके की ओर से भारत की उच्चस्तरीय यात्राएं)**

1. प्रधानमंत्री श्री ली गुन मो, ने फरवरी,1988 में सद्भावना यात्रा की।
2. डीपीआरके के उप राष्ट्रपति श्री ली जोंग ओक ने मई, 1991 और मार्च, 1993 में भारत की यात्रा।
3. सुप्रीम पीपुल असेंबली के अध्यक्ष श्री यांग होंग सोप ने अप्रैल, 1988 में भारत की यात्रा की।
4. वर्कर्स पार्टी की केंद्रीय समिति के सचिव के रूप में एपीए के अध्यच श्री चोए थाय बोक ने अक्टूबर, 1998 में भारत की यात्रा की।
5. उप विदेश मंत्री श्री पाक गिल योन ने अप्रैल, 2000 में भारत की यात्रा की।
6. सुप्रीम पीपुल असेंबली के उपाध्यक्ष श्री जांग चोल ने जनवरी, 2003 में भारत की यात्रा की।
7. नई दिल्ली में आयोजित तीसरी जी ए वी आई पक्षकार बैठक में भाग लेने के लिए नवंबर, 2005 में सार्वजनिक स्वास्थ्य उप मंत्री श्री चोय चांग सिक ने भारत की यात्रा की।
8. संयुक्त सचिव (ई ए) के साथ द्विपक्षीय संबंधों पर चर्चा करने के लिए डी पी आर के के विदेश मंत्रालय में चौथे विभाग के निदेशक श्री मा चोल सू ने मार्च, 2006 में भारत की यात्रा की।
9. सूचना के क्षेत्र में सहयोग के लिए करार पर हस्ताक्षर करने के लिए डी पी आर के सूचना समिति के उपाध्यक्ष श्री री जू क्वान ने अप्रैल, 2006 में भारत की यात्रा की।
10. उप विदेश मंत्री श्री किम यांग Il ने मई, 2007 में और फिर अगस्त, 2009 में दिल्ली का दौरा किया।
11. डी पी आर कोरिया के विदेश मंत्री श्री रि सु यांग ने 12 से 14 अप्रैल 2015 तक भारत की द्विपक्षीय एवं अकेले यात्रा की जो लगभग तीन दशकों में डी पी आर कोरिया की ओर से मंत्री स्तर पर भारत की पहली यात्रा है।

**आईटीईसी सहायता एवं कार्यक्रम**

वर्ष 2002-03 से डी पी आर के को आई टी ई सी के पांच स्लॉटों की पेशकश की गई। वर्ष 2004 के लिए भारत स्लॉटों की संख्या 5 से बढ़ाकर 10 करने पर सहमत हुआ। तदनुसार, डीपीआरके के 10 नागरिकों को ''कंप्यूटर साफ्टवेयर अप्लीकेशन का विकास, कार्यान्वयन एवं प्रबंधन पर कार्यक्रम'', ''पेशेवरों के लिए अंग्रेजी'' और ''शिक्षा आयोजना एवं प्रशासन-21 में अंतर्राष्ट्रीय डिप्लोमा कार्यक्रम'' में भाग लेने के लिए 2004-05 में भारत भेजा गया। वर्ष 2008-09 में आई टी ई सी स्लॉटों की संख्या बढ़ाकर 18 कर दी गई। धीरे-धीरे स्लॉटों का उपयोग कम होने लगा और तदनुसार इनकी संख्या वर्ष 2011-12 में घटाकर 10 कर दी गई। वर्ष 2011-12 से डी पी आर के के लिए 10 स्लाटों की पेशकश की गई है। सितंबर, 2011 में, डी पी आर के ने विदेश सेवा संस्थान में विदेशी राजनयिकों के लिए पेशेवर पाठ्यक्रम (पी सी एफ डी) में स्लाट प्रदान करने के लिए अनुरोध किया। तदनुसार, डी पी आर के को एक स्लाट की पेशकश की गई। तथापि, अपनी नीति के तहत डी पी आर के ने कम से कम 2 सीट के लिए अनुरोध किया, डी पी आर के ने किसी विदेश राष्ट्र के लिए एक भी उम्मीदवार को प्रतिनियुक्त नहीं किया। उनके अनुरोध पर विचार किया गया तथा 1 फरवरी, 2006 से 10 मार्च, 2006 के दौरान आयोजितवें पी सी एफ डी में डी पी आर के की 2 महिला राजनयिकों को प्रशिक्षण दिया गया। हमारे सर्वोत्तम प्रयासों के बावजूद उसके पी सी एफ डी पाठ्यक्रम के लिए डी पी आर के के दो राजनयिकों को जगह प्रदान करना संभव नहीं हो सका। मंत्रालय ने 2014-2015 के दौरान कुल 15 आई टी ई सी स्लॉटों की पेशकश तथा डी पी आर कोरिया ने 14 स्लॉटों का उपयोग किया था। मंत्रालय द्वारा वित्त वर्ष 2015-16 के लिए डी पी आर कोरिया को 15 आई टी ई सी स्लाटों का आवंटन किया गया था जिसे और बढ़ाकर 30 कर दिया गया तथा आज तक की तिथि के अनुसार डी पी आर कोरिया द्वारा आवंटित स्लाटों में से लगभग 50 प्रतिशत का उपयोग कर लिया गया है।

**आर्थिक एवं वाणिज्यिक संबंध – व्यापार एवं निवेश के ब्यौरों के साथ**

हाल के समय में भारत और डी पी आर के के बीच द्विपक्षीय व्यापार में गिरावट आई है जिसका मुख्य कारण यह है कि डी पी आर के आर्थिक संकट / सुंयक्त राष्ट्र के प्रतिबंध की वजह से विदेश व्यापार करने में असमर्थ है। उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार (स्रोत : डी जी एफ टी, वाणिज्य मंत्रालय), वित्त वर्ष 2014-15 के दौरान डी पी आर के को भारत का निर्यात 76.52 मिलियन अमरीकी डालर तथा आयात 131.93 मिलियन अमरीकी डालर था।

डी पी आर के के साथ व्यापार से जुड़ी कुछ कठिनाइयां हैं, जैसे कि डी पी आर के के पास सीमित मात्रा में विदेशी मुद्रा का होना, सीधे शिपिंग का उपलब्ध न होना और किसी स्थापित बैंकिंग एवं बीमा प्रणाली के माध्यम से भुगतान प्राप्त होने की गारंटी का न होना। इन कारकों की वजह से तथा संयुक्त राष्ट्र के प्रतिबंध की वजह से भारतीय निर्यातकों ने इस बाजार की खोज करने में अधिक उत्साह का प्रदर्शन नहीं किया है।

डीपीआरके ने 'आस्थगित भुगतान आधार' पर हर साल भारत से उपभोक्ता माल का आयात करने में गहरी रूचि प्रदर्शित की है। भारत को आस्थगित भुगतान का विकल्प स्वीकार्य न होने की स्थिति में उन्होंने वस्तु विनिमय का भी प्रस्ताव किया था। उन्होंने अपने वार्षिक व्यापार मेला तथा डी पी आर के बाजार में भारतीय उत्पादों के संवर्धन के लिए आयोजित विभिन्न अन्य कार्यक्रमों में भारतीय कंपनियों, वाणिज्य चेंबर, कारोबार घरानों आदि की भागीदारी का भी स्वागत किया। उन्होंने विशेष रूप से पर्यटन एवं अतिथि सत्कार के क्षेत्रों में संयुक्त उद्यम एवं एफ डी आई में भी भारतीय कंपनियों की भागीदारी का स्वागत किया।

अप्रैल, 2014 में संचोन सिटी में एक एकीकृत सीमेंट प्लांट स्थापित करने के लिए संभाव्यता अध्ययन के लिए जेके सीमेंट, भारत के एक शिष्टमंडल ने डी पी आर के का दौरा किया। इस पर कोई अनुवर्ती कार्रवाई नहीं हुई है।

भारत की अपनी हाल की यात्रा के दौरान डी पी आर कोरिया के विदेश मंत्री ने भारतीय कारोबारियों से बातचीत की और उनसे डी पी आर कोरिया में निवेश करने का अनुरोध किया।

**मानवीय सहायता :**

प्राकृतिक आपदाओं की वजह से पिछले कुछ वर्षों के दौरान खाद्यान्न की कमी से जूझने वाले डी पी आर के को भारत मानवीय सहायता देता रहा है। डीपीआरके के प्राधिकारियों ने समय – समय पर डी पी आर के को भारत की ओर से मानवीय सहायता के लिए अपना आभार व्यक्त किया है। भारत की ओर से प्रदान की गई सहायता के तहत कंबल, चावल, गेहूँ, बेबी फूड, पोलीथीन सीट आदि का कंसाइनमेंट शामिल था। अतीत में, भारत ने सितंबर, 2002 में 2000 मीट्रिक टन सफेद चावल और जुलाई, 2004 में 1000 मीट्रिक चावल दान में दिया है। चार एमजी के 2,00,000 डेक्सामेथासोन (1 मिली इंजेक्शन) भी डी पी आर के को प्रदान किया गया है। भारत ने रियोंगचोन ट्रेन ब्लास्ट के पीड़ितों के लिए भी दवाओं को दान में दिया। भारत सरकार एवं भारत के लोगों की ओर से जनवरी, 2006 में डी पी आर के को 2000 मीट्रिक टन चावल भी दिया गया। भारत ने डब्ल्यू एफ पी के माध्यम से वर्ष 2011 में एक मिलियन अमरीकी डालर मूल्य की खाद्य सहायता भी प्रदान की थी।

दिसंबर, 2004 में भारत में सुनामी आने पर डी पी आर के सरकार ने भारत के लोगों की राहत के लिए प्रधानमंत्री राष्ट्रीय राहत कोष में 30,000 अमरीकी डालर की राशि दान में दी थी।

**सांस्कृतिक संबंध – पिछले कुछ वर्षों में आवक एवं जावक सांस्कृतिक मंडलियां**

वर्ष 1976 में हस्ताक्षरित डी पी आर के एवं भारत के बीच सांस्कृतिक करार के तहत पीयोंगयांग में आयोजित होने वाले अप्रैल स्प्रिंग मैत्री कला महोत्सव में भाग लेने के लिए हर साल आई सी सी आर मंडलियां भेजता रहा है, केवल 2003 को छोड़कर जब इस क्षेत्र में एस ए आर एस महामारी फैली हुई थी। दोनों देशों के बीच राजनयिक संबंध स्थापित होने की 30वीं वर्षगांठ के अवसर पर आयोजित स्प्रिंग महोत्सव 2004 में एक भांगड़ा / गिधा नृत्य मंडली ने भाग लिया। विभिन्न कारणों से पिछले दो वर्षों के दौरान एक भी सांस्कृतिक मंडली ने डी पी आर कोरिया का दौरा नहीं किया है।

**पियोंगयांग अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव**

भारत नियमित आधार पर इस द्विवार्षिक पियोंगयांग अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव (पी आई एफ एफ) में भाग लेता रहा है। कोरिया के लोग भारतीय फीचर फिल्मों के शौकीन हैं तथा कोरिया की आम जनता एवं प्राधिकारियों द्वारा लोकप्रिय फिल्मों की प्रशंसा की जाती है तथा वे इनको शौक से याद करते हैं। 11वें पी आई एफ एफ में बंगला फिल्म 'एक नादिर गल्पो' (एक नदी की कहानी) को इसके संगीत के लिए पुरस्कार दिया गया तथा वर्ष 2010 में 12वें फिल्म महोत्सव में भारतीय फीचर फिल्म ''फॉर रियल'' ने एक विशेष पुरस्कार जीता। भारत ने कुल 10 भारतीय मूवी के साथ सितंबर, 2012 में 13वें पियोंगयांग अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में भाग लिया। भारत ने 2 फीचर फिल्मों अर्थात उरूमी (मलयालम) और बालगंर्धव (मराठी) के अलावा 'सॉग्स ऑफ मशंग्वा' पर एक वृत्त चित्र के साथ भाग लिया। भारत ने सितंबर, 2014 में 14वें पी आई एफ एफ में भाग लिया तथा आयोजकों ने कुल 8 भारतीय फीचर फिल्मों को दिखाया। संजय लीला भंसाली की फिल्म ''राम लीला'' और अनिल शर्मा की फिल्म ''सिंह साहब दि ग्रेट'' को क्रमश: सर्वोत्तम प्रौद्योगिकी एवं विशेष पुरस्कार मिला।

**भारत – कोरिया मैत्री संघ**

विदेश सांस्कृतिक संबंध समिति (सी सी आर एफ सी) द्वारा डी पी आर के में मैत्रीपूर्ण संबंधों को बढ़ावा देने तथा भारत की सांस्कृतिक छवि प्रस्तुत करने के लिए फरवरी, 1970 में भारत – कोरिया मैत्री संघ स्थापित किया गया। यह संघ मिशन और सी सी आर एफ सी के बीच बातचीत के लिए नोडल बिंदु है, जो हमारे आई सी सी आर का समकक्ष है। यह संघ दोनों देशें के बीच संबंधों को बढ़ावा देने के लिए समय – समय पर कार्यक्रमों का आयोजन करता है। यह संघ एक मैत्री स्कूल, एक फार्म और शू फैक्ट्री चलाता है। भारत ने मार्च, 2010 में 100

किलो गेहूँ के बीज का दान किया। अगस्त, 2006 में भारत - डी पी आर के मैत्री स्कूल को कंप्यूटर एवं आडियो विजुअल उपकरण भी दान दिए गए। संस्कृति विभाग ने वर्ष 2009-10 में इस संघ को 50,000 रूपए का सहायता अनुदान संस्वीकृत किया था। वर्ष 2010-11 में संघ को संस्कृति मंत्रालय की संस्वीकृति के तहत 2000 यूरो का एक चेक दिया गया। वित्त वर्ष 2013-14 के दौरान भी संस्कृति मंत्रालय ने 5 लाख रूपए का सहायता अनुदान संस्वीकृत किया तथा कंप्यूटर, प्रिंटर एवं उर्वरक के रूप में संघ को प्रदान किया। वर्तमान वित्त वर्ष (2014-2015) के लिए भी भारत सरकार ने 5 लाख रुपए का सहायता अनुदान संस्वीकृत किया है तथा पॉवर ट्रिलर, कंप्यूटर, एल ई डी टीवी के रूप में डी पी आर कोरिया - भारत मैत्री संघ की यूनिटों को प्रदान किया है। वर्तमान वित्त वर्ष (2015-16) के लिए भी भारत सरकार द्वारा 5 लाख रूपए का सहायता अनुदान संस्वीकृत किया गया है।

**भारत एवं डीपीआरके के बीच राजनय संबंधों की स्थापना की 40वीं वर्षगांठ**

भारत और डी पी आर के के बीच राजनयिक संबंधों की स्थापना (10 दिसंबर, 2013) की 40वीं वर्षगांठ मनाने के लिए मिशन ने 28 अक्टूबर, 2013 को पियोंगयांग विदेश अध्ययन विश्वविद्यालय (पी यू एफ एस) को 300 हिंदी पुस्तकें एवं साफ्टवेयर (हिंदी अध्यापक) दान में दिए, भारतीय फीचर फिल्म 'तारे जमीन पर' को विदेश सांस्कृतिक संबंध समिति (सी सी आर एफ सी) तथा भारत - डी पी आर के मैत्री सोसायटी के सहयोग से 27 नवंबर, 2013 को प्रदर्शित किया जिसमें पियोंगयांग स्थित यूएन एजेंसियों एवं राजनयिक मिशनों ने भाग लिया जिसमें 80 प्रख्यात डी पी आर के नागरिक तथा भारत – कोरिया मैत्री संघ के सदस्य शामिल थे। कार्यक्रमों के समापन के लिए राजदूत ने 12 दिसंबर, 2013 को डी पी आर के के गणमान्य व्यक्तियों, मिशन प्रमुखों, पियोंगयांग में यूएन एजेंसियों के लिए एक स्वागत समारोह का आयोजन किया जिसमें डी पी आर के के विदेश मंत्री मुख्य अतिथि थे।

**भारतीय समुदाय**

इस समय केवल 11 भारतीय डी पी आर कोरिया में रह रहे हैं जिसमें उनके परिवार के सदस्य भी शामिल हैं जो संयुक्त राष्ट्र की एजेंसियों जैसे कि यू एन डी पी, यूनिसेफ, डब्ल्यू एच ओ एवं यू एन एफ पी ए एवं अंतर्राष्ट्रीय गैर सरकारी संगठनों के लिए काम कर रहे हैं।

**भारत के साथ हवाई संपर्क / सुविधाजनक यात्रा के मार्ग**

भारत और डी पी आर के के बीच कोई सीधा हवाई संपर्क नहीं है। हांगकांग होते हुए या बीजिंग की सीधी उड़ान के माध्यम से यहां पहुंचा जा सकता है। एयर कोरियो बीजिंग से सप्ताह में तीन बार मंगलवार, वीरवार और शनिवार को उड़ानों का संचालन करता है। एयर चाइना ग्रीष्म ऋतु के दौरान मार्च से अक्टूबर तक सप्ताह में दो दिन सोमवार और मंगलवार को दो उड़ानों का संचालन करता है। बीजिंग और पियोंगयांग के बीच ट्रेन सेवा सप्ताह में चार बार है (सोमवार / बुधवार कोरियाई ट्रेन और शुक्रवार / शनिवार चाइनीज ट्रेन)।

---

**फरवरी, 2016**